५०२५/२००७/१८७२/२४५२०+५१/

AVAILABLE AT :

SRI NAGAR (KASHMIR)
Vijayshwar Jyotish Karalaya
Bij Bihara.
KASHMIR PRINTING PRESS
Tehsil Road, Anant Nag,

DELHI
DEHATI PUSTAK BHANDAR
Chawri Bazar, Delhi-110006
Tel No. 261080

NEW DELHI
Shri K. N. JALA
Pamposh Enclave, New Delhi
Tel. : 645299

JAMMU
AND LAL & SONS, Book Sellers
Pakka Danga
BHASIN STATIONERY STORE
City Chowk
GUPTA STATIONERY
City Chowk

विजयेश्वर जन्त्री के सम्पाद

ज्योतिषी प्रेमनाथ शास्त्री

ઉંબિરુંયેમ્રુંગ્યંચમઃ

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय

ॐ श्रीगुरुदत्तात्रेयाय नमः

श्रीगुरुदत्तात्रेयाय नमः

| | | |

| | | |

| ۱ | ۲ | ۳ | ۴ | ۵ | ۶ | ۷ | ۸ | ۹ | ۱۰ | ۱۱ | ۱۲ | ۱۳ | ۱۴ | ۱۵ | ۱۶ | ۱۷ | ۱۸ | ۱۹ | ۲۰ | ۲۱ | ۲۲ | ۲۳ | ۲۴ | ۲۵ | ۲۶ | ۲۷ | ۲۸ | ۲۹ | ۳۰ | ۳۱ | ۳۲ | ۳۳ | ۳۴ | ۳۵ | ۳۶ | ۳۷ | ۳۸ | ۳۹ | ۴۰ | ۴۱ | ۴۲ | ۴۳ | ۴۴ | ۴۵ | ۴۶ | ۴۷ | ۴۸ | ۴۹ | ۵۰ | ۵۱ | ۵۲ | ۵۳ | ۵۴ | ۵۵ | ۵۶ | ۵۷ | ۵۸ | ۵۹ | ۶۰ | ۶۱ | ۶۲ | ۶۳ | ۶۴ | ۶۵ | ۶۶ | ۶۷ | ۶۸ | ۶۹ | ۷۰ | ۷۱ | ۷۲ | ۷۳ | ۷۴ | ۷۵ | ۷۶ | ۷۷ | ۷۸ | ۷۹ | ۸۰ | ۸۱ | ۸۲ | ۸۳ | ۸۴ | ۸۵ | ۸۶ | ۸۷ | ۸۸ | ۸۹ | ۹۰ | ۹۱ | ۹۲ | ۹۳ | ۹۴ | ۹۵ | ۹۶ | ۹۷ | ۹۸ | ۹۹ | ۱۰۰ | ۱۰۱ | ۱۰۲ | ۱۰۳ | ۱۰۴ | ۱۰۵ | ۱۰۶ | ۱۰۷ | ۱۰۸ | ۱۰۹ | ۱۱۰ | ۱۱۱ | ۱۱۲ | ۱۱۳ | ۱۱۴ | ۱۱۵ | ۱۱۶ | ۱۱۷ | ۱۱۸ | ۱۱۹ | ۱۲۰ | ۱۲۱ | ۱۲۲ | ۱۲۳ | ۱۲۴ | ۱۲۵ | ۱۲۶ | ۱۲۷ | ۱۲۸ | ۱۲۹ | ۱۳۰ | ۱۳۱ | ۱۳۲ | ۱۳۳ | ۱۳۴ | ۱۳۵ | ۱۳۶ | ۱۳۷ | ۱۳۸ | ۱۳۹ | ۱۴۰ | ۱۴۱ | ۱۴۲ | ۱۴۳ | ۱۴۴ | ۱۴۵ | ۱۴۶ | ۱۴۷ | ۱۴۸ | ۱۴۹ | ۱۵۰ | ۱۵۱ | ۱۵۲ | ۱۵۳ | ۱۵۴ | ۱۵۵ | ۱۵۶ | ۱۵۷ | ۱۵۸ | ۱۵۹ | ۱۶۰ | ۱۶۱ | ۱۶۲ | ۱۶۳ | ۱۶۴ | ۱۶۵ | ۱۶۶ | ۱۶۷ | ۱۶۸ | ۱۶۹ | ۱۷۰ | ۱۷۱ | ۱۷۲ | ۱۷۳ | ۱۷۴ | ۱۷۵ | ۱۷۶ | ۱۷۷ | ۱۷۸ | ۱۷۹ | ۱۸۰ | ۱۸۱ | ۱۸۲ | ۱۸۳ | ۱۸۴ | ۱۸۵ | ۱۸۶ | ۱۸۷ | ۱۸۸ | ۱۸۹ | ۱۹۰ | ۱۹۱ | ۱۹۲ | ۱۹۳ | ۱۹۴ | ۱۹۵ | ۱۹۶ | ۱۹۷ | ۱۹۸ | ۱۹۹ | ۲۰۰ | ۲۰۱ | ۲۰۲ | ۲۰۳ | ۲۰۴ | ۲۰۵ | ۲۰۶ | ۲۰۷ | ۲۰۸ | ۲۰۹ | ۲۱۰ | ۲۱۱ | ۲۱۲ | ۲۱۳ | ۲۱۴ | ۲۱۵ | ۲۱۶ | ۲۱۷ | ۲۱۸ | ۲۱۹ | ۲۲۰ | ۲۲۱ | ۲۲۲ | ۲۲۳ | ۲۲۴ | ۲۲۵ | ۲۲۶ | ۲۲۷ | ۲۲۸ | ۲۲۹ | ۲۳۰ | ۲۳۱ | ۲۳۲ | ۲۳۳ | ۲۳۴ | ۲۳۵ | ۲۳۶ | ۲۳۷ | ۲۳۸ | ۲۳۹ | ۲۴۰ | ۲۴۱ | ۲۴۲ | ۲۴۳ | ۲۴۴ | ۲۴۵ | ۲۴۶ | ۲۴۷ | ۲۴۸ | ۲۴۹ | ۲۵۰ | ۲۵۱ | ۲۵۲ | ۲۵۳ | ۲۵۴ | ۲۵۵ | ۲۵۶ | ۲۵۷ | ۲۵۸ | ۲۵۹ | ۲۶۰ | ۲۶۱ | ۲۶۲ | ۲۶۳ | ۲۶۴ | ۲۶۵ | ۲۶۶ | ۲۶۷ | ۲۶۸ | ۲۶۹ | ۲۷۰ | ۲۷۱ | ۲۷۲ | ۲۷۳ | ۲۷۴ | ۲۷۵ | ۲۷۶ | ۲۷۷ | ۲۷۸ | ۲۷۹ | ۲۸۰ | ۲۸۱ | ۲۸۲ | ۲۸۳ | ۲۸۴ | ۲۸۵ | ۲۸۶ | ۲۸۷ | ۲۸۸ | ۲۸۹ | ۲۹۰ | ۲۹۱ | ۲۹۲ | ۲۹۳ | ۲۹۴ | ۲۹۵ | ۲۹۶ | ۲۹۷ | ۲۹۸ | ۲۹۹ | ۳۰۰ | ۳۰۱ | ۳۰۲ | ۳۰۳ | ۳۰۴ | ۳۰۵ | ۳۰۶ | ۳۰۷ | ۳۰۸ | ۳۰۹ | ۳۱۰ | ۳۱۱ | ۳۱۲ | ۳۱۳ | ۳۱۴ | ۳۱۵ | ۳۱۶ | ۳۱۷ | ۳۱۸ | ۳۱۹ | ۳۲۰ | ۳۲۱ | ۳۲۲ | ۳۲۳ | ۳۲۴ | ۳۲۵ | ۳۲۶ | ۳۲۷ | ۳۲۸ | ۳۲۹ | ۳۳۰ | ۳۳۱ | ۳۳۲ | ۳۳۳ | ۳۳۴ | ۳۳۵ | ۳۳۶ | ۳۳۷ | ۳۳۸ | ۳۳۹ | ۳۴۰ | ۳۴۱ | ۳۴۲ | ۳۴۳ | ۳۴۴ | ۳۴۵ | ۳۴۶ | ۳۴۷ | ۳۴۸ | ۳۴۹ | ۳۵۰ | ۳۵۱ | ۳۵۲ | ۳۵۳ | ۳۵۴ | ۳۵۵ | ۳۵۶ | ۳۵۷ | ۳۵۸ | ۳۵۹ | ۳۶۰ | ۳۶۱ | ۳۶۲ | ۳۶۳ | ۳۶۴ | ۳۶۵ | ۳۶۶ | ۳۶۷ | ۳۶۸ | ۳۶۹ | ۳۷۰ | ۳۷۱ | ۳۷۲ | ۳۷۳ | ۳۷۴ | ۳۷۵ | ۳۷۶ | ۳۷۷ | ۳۷۸ | ۳۷۹ | ۳۸۰ | ۳۸۱ | ۳۸۲ | ۳۸۳ | ۳۸۴ | ۳۸۵ | ۳۸۶ | ۳۸۷ | ۳۸۸ | ۳۸۹ | ۳۹۰ | ۳۹۱ | ۳۹۲ | ۳۹۳ | ۳۹۴ | ۳۹۵ | ۳۹۶ | ۳۹۷ | ۳۹۸ | ۳۹۹ | ۴۰۰ | ۴۰۱ | ۴۰۲ | ۴۰۳ | ۴۰۴ | ۴۰۵ | ۴۰۶ | ۴۰۷ | ۴۰۸ | ۴۰۹ | ۴۱۰ | ۴۱۱ | ۴۱۲ | ۴۱۳ | ۴۱۴ | ۴۱۵ | ۴۱۶ | ۴۱۷ | ۴۱۸ | ۴۱۹ | ۴۲۰ | ۴۲۱ | ۴۲۲ | ۴۲۳ | ۴۲۴ | ۴۲۵ | ۴۲۶ | ۴۲۷ | ۴۲۸ | ۴۲۹ | ۴۳۰ | ۴۳۱ | ۴۳۲ | ۴۳۳ | ۴۳۴ | ۴۳۵ | ۴۳۶ | ۴۳۷ | ۴۳۸ | ۴۳۹ | ۴۴۰ | ۴۴۱ | ۴۴۲ | ۴۴۳ | ۴۴۴ | ۴۴۵ | ۴۴۶ | ۴۴۷ | ۴۴۸ | ۴۴۹ | ۴۵۰ | ۴۵۱ | ۴۵۲ | ۴۵۳ | ۴۵۴ | ۴۵۵ | ۴۵۶ | ۴۵۷ | ۴۵۸ | ۴۵۹ | ۴۶۰ | ۴۶۱ | ۴۶۲ | ۴۶۳ | ۴۶۴ | ۴۶۵ | ۴۶۶ | ۴۶۷ | ۴۶۸ | ۴۶۹ | ۴۷۰ | ۴۷۱ | ۴۷۲ | ۴۷۳ | ۴۷۴ | ۴۷۵ | ۴۷۶ | ۴۷۷ | ۴۷۸ | ۴۷۹ | ۴۸۰ | ۴۸۱ | ۴۸۲ | ۴۸۳ | ۴۸۴ | ۴۸۵ | ۴۸۶ | ۴۸۷ | ۴۸۸ | ۴۸۹ | ۴۹۰ | ۴۹۱ | ۴۹۲ | ۴۹۳ | ۴۹۴ | ۴۹۵ | ۴۹۶ | ۴۹۷ | ۴۹۸ | ۴۹۹ | ۵۰۰ | ۵۰۱ | ۵۰۲ | ۵۰۳ | ۵۰۴ | ۵۰۵ | ۵۰۶ | ۵۰۷ | ۵۰۸ | ۵۰۹ | ۵۱۰ | ۵۱۱ | ۵۱۲ | ۵۱۳ | ۵۱۴ | ۵۱۵ | ۵۱۶ | ۵۱۷ | ۵۱۸ | ۵۱۹ | ۵۲۰ | ۵۲۱ | ۵۲۲ | ۵۲۳ | ۵۲۴ | ۵۲۵ | ۵۲۶ | ۵۲۷ | ۵۲۸ | ۵۲۹ | ۵۳۰ | ۵۳۱ | ۵۳۲ | ۵۳۳ | ۵۳۴ | ۵۳۵ | ۵۳۶ | ۵۳۷ | ۵۳۸ | ۵۳۹ | ۵۴۰ | ۵۴۱ | ۵۴۲ | ۵۴۳ | ۵۴۴ | ۵۴۵ | ۵۴۶ | ۵۴۷ | ۵۴۸ | ۵۴۹ | ۵۵۰ | ۵۵۱ | ۵۵۲ | ۵۵۳ | ۵۵۴ | ۵۵۵ | ۵۵۶ | ۵۵۷ | ۵۵۸ | ۵۵۹ | ۵۶۰ | ۵۶۱ | ۵۶۲ | ۵۶۳ | ۵۶۴ | ۵۶۵ | ۵۶۶ | ۵۶۷ | ۵۶۸ | ۵۶۹ | ۵۷۰ | ۵۷۱ | ۵۷۲ | ۵۷۳ | ۵۷۴ | ۵۷۵ | ۵۷۶ | ۵۷۷ | ۵۷۸ | ۵۷۹ | ۵۸۰ | ۵۸۱ | ۵۸۲ | ۵۸۳ | ۵۸۴ | ۵۸۵ | ۵۸۶ | ۵۸۷ | ۵۸۸ | ۵۸۹ | ۵۹۰ | ۵۹۱ | ۵۹۲ | ۵۹۳ | ۵۹۴ | ۵۹۵ | ۵۹۶ | ۵۹۷ | ۵۹۸ | ۵۹۹ | ۶۰۰ | ۶۰۱ | ۶۰۲ | ۶۰۳ | ۶۰۴ | ۶۰۵ | ۶۰۶ | ۶۰۷ | ۶۰۸ | ۶۰۹ | ۶۱۰ | ۶۱۱ | ۶۱۲ | ۶۱۳ | ۶۱۴ | ۶۱۵ | ۶۱۶ | ۶۱۷ | ۶۱۸ | ۶۱۹ | ۶۲۰ | ۶۲۱ | ۶۲۲ | ۶۲۳ | ۶۲۴ | ۶۲۵ | ۶۲۶ | ۶۲۷ | ۶۲۸ | ۶۲۹ | ۶۳۰ | ۶۳۱ | ۶۳۲ | ۶۳۳ | ۶۳۴ | ۶۳۵ | ۶۳۶ | ۶۳۷ | ۶۳۸ | ۶۳۹ | ۶۴۰ | ۶۴۱ | ۶۴۲ | ۶۴۳ | ۶۴۴ | ۶۴۵ | ۶۴۶ | ۶۴۷ | ۶۴۸ | ۶۴۹ | ۶۵۰ | ۶۵۱ | ۶۵۲ | ۶۵۳ | ۶۵۴ | ۶۵۵ | ۶۵۶ | ۶۵۷ | ۶۵۸ | ۶۵۹ | ۶۶۰ | ۶۶۱ | ۶۶۲ | ۶۶۳ | ۶۶۴ | ۶۶۵ | ۶۶۶ | ۶۶۷ | ۶۶۸ | ۶۶۹ | ۶۷۰ | ۶۷۱ | ۶۷۲ | ۶۷۳ | ۶۷۴ | ۶۷۵ | ۶۷۶ | ۶۷۷ | ۶۷۸ | ۶۷۹ | ۶۸۰ | ۶۸۱ | ۶۸۲ | ۶۸۳ | ۶۸۴ | ۶۸۵ | ۶۸۶ | ۶۸۷ | ۶۸۸ | ۶۸۹ | ۶۹۰ | ۶۹۱ | ۶۹۲ | ۶۹۳ | ۶۹۴ | ۶۹۵ | ۶۹۶ | ۶۹۷ | ۶۹۸ | ۶۹۹ | ۷۰۰ | ۷۰۱ | ۷۰۲ | ۷۰۳ | ۷۰۴ | ۷۰۵ | ۷۰۶ | ۷۰۷ | ۷۰۸ | ۷۰۹ | ۷۱۰ | ۷۱۱ | ۷۱۲ | ۷۱۳ | ۷۱۴ | ۷۱۵ | ۷۱۶ | ۷۱۷ | ۷۱۸ | ۷۱۹ | ۷۲۰ | ۷۲۱ | ۷۲۲ | ۷۲۳ | ۷۲۴ | ۷۲۵ | ۷۲۶ | ۷۲۷ | ۷۲۸ | ۷۲۹ | ۷۳۰ | ۷۳۱ | ۷۳۲ | ۷۳۳ | ۷۳۴ | ۷۳۵ | ۷۳۶ | ۷۳۷ | ۷۳۸ | ۷۳۹ | ۷۴۰ | ۷۴۱ | ۷۴۲ | ۷۴۳ | ۷۴۴ | ۷۴۵ | ۷۴۶ | ۷۴۷ | ۷۴۸ | ۷۴۹ | ۷۵۰ | ۷۵۱ | ۷۵۲ | ۷۵۳ | ۷۵۴ | ۷۵۵ | ۷۵۶ | ۷۵۷ | ۷۵۸ | ۷۵۹ | ۷۶۰ | ۷۶۱ | ۷۶۲ | ۷۶۳ | ۷۶۴ | ۷۶۵ | ۷۶۶ | ۷۶۷ | ۷۶۸ | ۷۶۹ | ۷۷۰ | ۷۷۱ | ۷۷۲ | ۷۷۳ | ۷۷۴ | ۷۷۵ | ۷۷۶ | ۷۷۷ | ۷۷۸ | ۷۷۹ | ۷۸۰ | ۷۸۱ | ۷۸۲ | ۷۸۳ | ۷۸۴ | ۷۸۵ | ۷۸۶ | ۷۸۷ | ۷۸۸ | ۷۸۹ | ۷۹۰ | ۷۹۱ | ۷۹۲ | ۷۹۳ | ۷۹۴ | ۷۹۵ | ۷۹۶ | ۷۹۷ | ۷۹۸ | ۷۹۹ | ۸۰۰ | ۸۰۱ | ۸۰۲ | ۸۰۳ | ۸۰۴ | ۸۰۵ | ۸۰۶ | ۸۰۷ | ۸۰۸ | ۸۰۹ | ۸۱۰ | ۸۱۱ | ۸۱۲ | ۸۱۳ | ۸۱۴ | ۸۱۵ | ۸۱۶ | ۸۱۷ | ۸۱۸ | ۸۱۹ | ۸۲۰ | ۸۲۱ | ۸۲۲ | ۸۲۳ | ۸۲۴ | ۸۲۵ | ۸۲۶ | ۸۲۷ | ۸۲۸ | ۸۲۹ | ۸۳۰ | ۸۳۱ | ۸۳۲ | ۸۳۳ | ۸۳۴ | ۸۳۵ | ۸۳۶ | ۸۳۷ | ۸۳۸ | ۸۳۹ | ۸۴۰ | ۸۴۱ | ۸۴۲ | ۸۴۳ | ۸۴۴ | ۸۴۵ | ۸۴۶ | ۸۴۷ | ۸۴۸ | ۸۴۹ | ۸۵۰ | ۸۵۱ | ۸۵۲ | ۸۵۳ | ۸۵۴ | ۸۵۵ | ۸۵۶ | ۸۵۷ | ۸۵۸ | ۸۵۹ | ۸۶۰ | ۸۶۱ | ۸۶۲ | ۸۶۳ | ۸۶۴ | ۸۶۵ | ۸۶۶ | ۸۶۷ | ۸۶۸ | ۸۶۹ | ۸۷۰ | ۸۷۱ | ۸۷۲ | ۸۷۳ | ۸۷۴ | ۸۷۵ | ۸۷۶ | ۸۷۷ | ۸۷۸ | ۸۷۹ | ۸۸۰ | ۸۸۱ | ۸۸۲ | ۸۸۳ | ۸۸۴ | ۸۸۵ | ۸۸۶ | ۸۸۷ | ۸۸۸ | ۸۸۹ | ۸۹۰ | ۸۹۱ | ۸۹۲ | ۸۹۳ | ۸۹۴ | ۸۹۵ | ۸۹۶ | ۸۹۷ | ۸۹۸ | ۸۹۹ | ۹۰۰ | ۹۰۱ | ۹۰۲ | ۹۰۳ | ۹۰۴ | ۹۰۵ | ۹۰۶ | ۹۰۷ | ۹۰۸ | ۹۰۹ | ۹۱۰ | ۹۱۱ | ۹۱۲ | ۹۱۳ | ۹۱۴ | ۹۱۵ | ۹۱۶ | ۹۱۷ | ۹۱۸ | ۹۱۹ | ۹۲۰ | ۹۲۱ | ۹۲۲ | ۹۲۳ | ۹۲۴ | ۹۲۵ | ۹۲۶ | ۹۲۷ | ۹۲۸ | ۹۲۹ | ۹۳۰ | ۹۳۱ | ۹۳۲ | ۹۳۳ | ۹۳۴ | ۹۳۵ | ۹۳۶ | ۹۳۷ | ۹۳۸ | ۹۳۹ | ۹۴۰ | ۹۴۱ | ۹۴۲ | ۹۴۳ | ۹۴۴ | ۹۴۵ | ۹۴۶ | ۹۴۷ | ۹۴۸ | ۹۴۹ | ۹۵۰ | ۹۵۱ | ۹۵۲ | ۹۵۳ | ۹۵۴ | ۹۵۵ | ۹۵۶ | ۹۵۷ | ۹۵۸ | ۹۵۹ | ۹۶۰ | ۹۶۱ | ۹۶۲ | ۹۶۳ | ۹۶۴ | ۹۶۵ | ۹۶۶ | ۹۶۷ | ۹۶۸ | ۹۶۹ | ۹۷۰ | ۹۷۱ | ۹۷۲ | ۹۷۳ | ۹۷۴ | ۹۷۵ | ۹۷۶ | ۹۷۷ | ۹۷۸ | ۹۷۹ | ۹۸۰ | ۹۸۱ | ۹۸۲ | ۹۸۳ | ۹۸۴ | ۹۸۵ | ۹۸۶ | ۹۸۷ | ۹۸۸ | ۹۸۹ | ۹۹۰ | ۹۹۱ | ۹۹۲ | ۹۹۳ | ۹۹۴ | ۹۹۵ | ۹۹۶ | ۹۹۷ | ۹۹۸ | ۹۹۹ | ۱۰۰۰ |
|---|---|---

૧૦	૯	૮	૭	૬	૫	૪	૩	૨	૧	૦
૪	૩	૨	૧	૦	૯	૮	૭	૬	૫	૪
૧૦	૯	૮	૭	૬	૫	૪	૩	૨	૧	૦

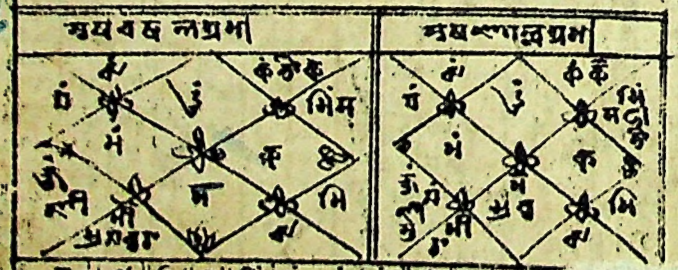

ल												
३	३	३	३	५	३	३	३	३	०५	०५	१	शुद्धः
१	०५	००	३	१	००	०५	१	००	००	००	००	दृश्यः
०	१	२	०	४	००	२	०	५	३	०४	०३	भावग्रह

प्राचीन मन्त्र, यन्त्र, तन्त्र, जादू व सामुद्रिक ग्रन्थ

असली प्रा. हस्तलि० मंत्र महार्णव 171/-
असली प्रा हस्तलि० यंत्र महार्णव 171/-
असली प्रा हस्तलि० तंत्र महार्णव 171/-
मंत्र-यंत्र तंत्र विज्ञान भास्कर 501/-
वृहद् संहिता (संपूर्ण फलित ग्रंथ) 121/-
असली प्राचीन रावण संहिता 501/-
अ.प्रा हस्त. भृगुसंहिता महाशास्त्र 501/-
सचित्र स्त्री पुरुष वशीकरण सिद्धि 21/-
भूत-प्रेत, जादू टोना, मंतर मूठ 21/-
प्रेतात्मा, डाकिनी, ओझाविद्या सिद्धि 21/-
देवी-देवता-पूजन यन्त्र 21/-
महाविद्यासिद्धि 21/- लघुमंत्रमहोदधि 21/-
हमजाद (छाया पुरुष) सिद्धि 21/-
योगिनी सिद्धि 21/- भैरव सिद्धि 21/-
यंत्र-शक्ति वि. 21/- तंत्र-शक्ति वि. 21/-
मंत्र-शक्ति वि. 21/- मोहनी वि. सिद्धि 21/-
बटुक भैरव सिद्धि 21/- लक्ष्मी सिद्धि 21/-
महाविकराल भैरव सिद्धि 21/-
किलकारीभैरव सि. 21/- कामाक्षा . 21/-
ऋद्धि-सिद्धि मंत्रावली 21/-
असली प्रा. सच्ची आकर्षणशक्तियां 24/-
तांत्रिक साधन यंत्र, मंत्र, तंत्र सिद्धि 21/-
वशीकरण मोहिनी विद्या (हिप्नोटिज्म) 21/-
सिद्ध रुद्राक्ष प्रयोग विधि 21/-
देवी देवता हनुमान, छाया पुरुष एव
यक्षिणी भैरव सिद्धि के प्रयोग 21/-
भूत-प्रेत, अघोर दक्षिणी विद्या सिद्धि 21/-
मनोकामना, कामाख्या, अष्टलक्ष्मी सिद्धि 21/-
रत्न-परिचय, रत्न-प्रदीप, रत्न विज्ञान 21/-
स्वास्तिक एवं ॐ रहस्य 21/-
पुस्तक सिद्ध बीसा यन्त्र 21/-
शिव मंत्रावली (तंत्रावली सहित) 21/-
मिस्मिरेजम हिप्नो शक्तिचक्र सम्मोहन 21/-
अ.प्राचीन यंत्र-मंत्र-तंत्रशिरोमणि 321/-

असली प्रा.हस्तलि वृहद् मंत्र-महार्णव 501/-
तन्त्र कौतुहलम 251/-
तांत्रिक सर्वस्व 201/-
जादूगर कैसे बनें? 24/ ताश मैजिक 24/-
घर बैठे जादू सीखिये 24/-ताशके जादू 5/-
जादूगर बादशाह 10/- दत्तात्रेय तंत्र 10/-
महात्मा रावण कृत उड्डीश तंत्र 10/-
इच्छापूरक सिद्धियां (मनवांछित फल की प्राप्ति) 24/- सचित्र करामात 15/-
वृ.वि. सामुद्रिक वि (सं. दो खंड) 163/50
असली प्राचीन सिद्धिदाता-यंत्र-तंत्र-मंत्र
महाशास्त्र (सम्पूर्ण दोनों खंड) 201/-
कौआ यन्त्र-मन्त्र-तन्त्र सिद्धि 10/-
उल्लू यन्त्र-मन्त्र-तन्त्र सिद्धि 10/-
बाज, गिद्ध, मुर्गा यंत्र-तंत्र-मंत्र सिद्धि 10/-
पंच पक्षी यंत्र-तंत्र-मंत्र सिद्धि 30/-
यंत्र-मंत्र-तंत्र चिकित्सा 24/-
प्राचीन सच्ची करामाती सिद्धियां 30/-
शिवतन्त्रावली (शिवजी के तंत्र) 3/-
हनुमत् सिद्धि 71/- मोहिनीमंत्र-तंत्र 21/-
प्राचीन यन्त्र-मन्त्र-तन्त्र सार 30/-
अ. प्रा. हस्तलि. वृ. मंत्रमहोदधि 101/-
काला जादू (घर का मदारी) 10/-
चीन जापान बंगाल आसाम का जादू 51/-
जादू मिस्मिरेजम 10/- वशीकरणमंत्र 15/-
अ. प्रा. हस्तलि० भारत का जादू 51/-
वृ. इंद्रजाल (कौतुक रत्न भंडागार) 15/-
असली प्राचीन हस्तलि० इन्द्रजाल 31/-
असली प्राचीन डामर तन्त्र 21/-
चौदह विद्या चौंसठ कला 15/-
मायामछंदरजाल 51/- जादूगरीशिक्षा 15/-
दक्षिण का जादू (जिन्दा जादूगर) 15/-
साँवरी तन्त्र (सेवड़े का जादू) 15/-
नवीन अपटूडेट जादूगरी (दोनों भाग) 48/-

पता देहाती पुस्तक भण्डार चावड़ी बाजार दिल्ली-6

तकल पदारथ है जग माही । भाग्यहीन नर पावत नाही ॥

असली, प्राचीन, हस्तलिखित ग्रन्थ

भृगुसंहिता महाशास्त्र (भा० टी०)

● प्राचीनकाल में जब कि आज की भांति छपाई आदि का प्रचलन नहीं था, हमारे ऋषियों-मुनियों ने ग्रन्थों की रचना करके अपनी शिष्य-परम्परा के अनुसार उन्हें अक्षरशः स्मरण कराकर इस ज्ञान भण्डार को आगे बढ़ाया था। तत्पश्चात् ताड वृक्ष के पत्तों तथा भोजपत्र आदि पर इन ग्रन्थों को लिखा गया। बाद के कालखण्ड में विधर्मियों तथा आतकवादियों ने इन ग्रन्थों को नष्ट करने का सामूहिक तथा योजनाबद्ध प्रयास किया। इसका परिणाम यह हुआ कि सर्वांगीण पूर्ण ग्रन्थ दुष्प्राप्य हो गये। यदि कहीं कोई ग्रन्थ बचा तो उसके भी खण्ड-खण्ड हो गये अथवा विदेशी उठाकर ले गये। ऐसे ही दुर्लभ ग्रन्थों में "भृगुसंहिता महाशास्त्र" की गणना होती है, जिसका केवल नाम सुना था। कहा जाता है, किसी समय भृगु ऋषि द्वारा विष्णु भगवान की छाती में लात मारी जाने पर लक्ष्मी जी ने श्राप दिया था कि ब्राह्मण सदा निर्धन रहेंगे। तब भृगु जी ने लक्ष्मी जी से कहा था—"मैं एक ऐसा ग्रन्थ रचूंगा कि जिस किसी के पास यह महाग्रन्थ (भृगुसंहिता) होगा, लक्ष्मी सर्वदा उसका चरण-चुम्बन करेंगी।"

● अनेक अल्पज्ञ पंडित "भृगुसंहिता महाशास्त्र" के अगलो होने में सन्देह करते है। यह ग्रन्थ प्राचीनकाल से श्रवणगोचर होता रहा है। कुछ पंडित एव ज्योतिषी जिनके पास हस्तलिखित ग्रन्थ का कुछ भाग पाया जाता है, वे कई पीढियों से ग्रन्थ को दिखा सुनाकर जनता से उनकी कुण्डली का फलादेश बताकर **21/-** (इक्कीस रुपये) से **551/-** (पांच सौ इक्यावन) रुपये अथवा मुंह-मागी दक्षिणा तक ले लेते है। श्री भृगुऋषि रचित "भृगुसंहिता" जैसा भूत, भविष्य वर्तमान का पूर्ण विवरण बताने वाला महाग्रन्थ आज तक देखा न गया था, हा नाम ही सुना था। ● इस ग्रन्थ को भाग्यवान ही प्राप्त कर सकता है।

● संसार में कुछ भी असम्भव नहीं है। अनेक वर्षों तक अनथक परिश्रम तथा हजारों रुपया खर्च करके, कुण्डली के आधार पर भूत, भविष्य, वर्तमान का फलादेश बताने वाला हस्तलिखित "भृगुसंहिता महाशास्त्र" तैयार है।

20 x 30/6 (पुराण साइज), खुले पत्राकार, हस्तलिखित **1,410** पृष्ठ, **14** खण्डो में सम्पूर्ण, ऑफसेट प्रिंट। इस विशाल ग्रन्थ में अगणित कुण्डलो दी गई है। इस महाशास्त्र में वर्णित विधि-अनुसार ससार के किसी भी व्यक्ति की जन्म-कुण्डली का फलादेश आसानी से ज्ञात हो जाता है। सस्कृत के श्लोकों के साथ-साथ हिन्दी टीका इस ग्रन्थ की विशेषता है। सर्व जनोपयोगी इस विशाल ग्रन्थ की न्योछावर **501/-** (पाच सौ एक रुपये) है। ग्रन्थ सीमित सख्या में छपा है। अतः आज ही **51/-** M.O. द्वारा भेजकर बाकी **450/-** (चार सौ पचास) रुपये की वी० पी० पी० द्वारा घर बैठे ग्रन्थ प्राप्त करें।

देहाती पुस्तक भण्डार

चावड़ी बाजार . दिल्ली-६

Price : Rs. 0.00